JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में कबूतरा जनजाति की समस्याओं का चित्रण

मिथलेश स्नेही
शोधार्थी, हिंदी अध्ययनशाला एवं शोध केंद्र
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

डॉ. पायल लिल्हारे
शोध निर्देशक, हिंदी
अ.श.च.आ.शास.स्नात.महा.निवाड़ी (म.प्र.)

आधुनिक काल की सबसे लोकप्रिय एवं शक्तिशाली विधा है 'उपन्यास'। इसे मानव जीवन की महाकाव्यात्मक विधा भी कहा जा सकता है। मैत्रेयी पुष्पा समकालीन महिला उपन्यासकार के रूप में जानी जाती हैं उन्होंने स्मृति दंश, इदन्नमम, बेतवा बहती रही, झूला नट, कही ईसुरी फाग, त्रिया–हठ, गुनाह–बेगुनाह, चाक, अगनपाखी, फरिश्ते निकले आदि उपन्यास लिखें लेकिन इनके 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास का साहित्य जगत में एक विशिष्ट स्थान है। यह उपन्यास बुंदेलखंड में पाई जाने वाली कबूतरा जनजाति को केंद्र में रखकर लिखा गया है। 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास काफी व्यापक दृष्टिकोण के साथ लिखा गया है जिससे पाठक एक बार उपन्यास को पढ़ना शुरू करता है तो अंत तक उससे जुड़ा हुआ महसूस करता है। उपन्यास के पात्र पाठक से बातें करने लगते हैं और वह चिंतन की दिशा में आगे बढ़ता हैं। मैत्रेयी पुष्पा जी ने कबूतरा जनजाति के संघर्षों पर चिंतन मनन कर इस उपन्यास का नाम 'अल्मा कबूतरी' रखा है। इस जनजाति के संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पा लिखती है कि ''सड़कों, गलियों में घूमते या अखबारों की अपराध सुर्खियों में दिखाई देने वाली यह जनजाति सभ्य समाज के हाशिए पर डेरा लगाए सदियाँ गुजार देती हैं। उनके लिए हम कज्जा और 'दिकू' यानि सभ्य–सम्भ्रान्त, 'परदेसी', उनका इस्तेमाल करने वाले शोषक–उनके अपराधों से डरते हुए, मगर उन्हें अपराधी बनाए रखने के आग्रही। हमारे लिए वे ऐसे छापामार गुरिल्ले हैं जो हमारी असावधानियों की दरारों से झपट्टा मारकर वापस अपनी दुनिया में जा छिपते हैं। कबूतरा पुरूष या तो जंगल में रहता है या जेल में..., स्त्रियाँ शराब की भट्टियों पर या हमारे बिस्तरों पर ...।''[1]

कबूतरा जनजाति को अपराधी जनजाति घोषित करने तथा अपराधिक कार्यों में लिप्त होने के जिम्मेदार समाज तथा प्रशासन दोनों हैं। उपन्यास का पात्र रामसिंह देश के प्रधानमंत्री (पंडित जवाहरलाल नेहरू) के भाषण को रेखांकित करता हुआ कहता है ''मुझे अपराधी जनजातियों के अधिनियम की भयानक वास्तविकता मालूम है। यह इंसान की आजादी को नकारती है। इसे कानून संहिता से हटाने की कोशिश की जानी चाहिए। किसी भी जाति को अपराधी श्रेणी में नहीं डाला जा सकता। यह बँटवारा अपराधियों के प्रति न्याय और प्रगति के सिद्धांतों का उल्लंघन करता है।''[2] कबूतरा जनजाति बुंदेलखंड क्षेत्र में बिखराव रूप में पाई जाती है लेखिका कबूतरा जनजाति के बिखराव को प्रस्तुत करते हुए लिखती हैं–''रानी झाँसी के संग लड़ने वालों को उनके शहीद होने के बाद जब अंग्रेजों ने खदेड़ना शुरू किया तो जहाँ–तहाँ ऐसे फैल गए, जैसे पानी फैल जाता है। माटी उसे बिना शोरगुल किए सोख लेती है। जिनको बुंदेलखंड की मिट्टी ने अपना लिया, वे ऐसे लोग थे, जिनकी बोलीबानी, रहन–सहन, तौर–तरीके अपने इलाके के थे। मगर वे, जो इस कसौटी पर खरे न उतरते थे? जिनका पहनावा और भाषा जुदा थी, अलग छँट गए। वे अंग्रेजों की मार खाते हुए पत्थर–ढोकों की तरह यहाँ–वहाँ लुढ़कते रहे। वे अनाथ–असहाय, कुछ तो फौजी बूटों–तले कुचलकर मर–खप गए, कुछ भटकते–भागते यहाँ चले आए।''[3]

इस उपन्यास में कबूतरा जनजाति के लोगों के जीवन की विभिन्न समस्याओं जैसे यौन शोषण, राजनैतिक दबाव, छुआछूत की समस्या, पुलिस का अत्याचार, शिक्षा आदि का चित्रण प्रस्तुत हुआ है इन सभी समस्याओं को मुद्दों के आधार पर इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है।

शिक्षा के लिये संघर्ष – शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है शिक्षा प्राप्ति से समाज की विभिन्न समस्याओं का निदान खोजा जा सकता है 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में लेखिका ने रामसिंह की कथा के माध्यम से माँ भूरि से आरंभ होती है। कबूतरा बस्ती की पहली माँ रही भूरी जिसने पहली बार अपने बेटे रामसिंह को शिक्षा प्रदान करना चाहती थी वह रामसिंह को कुल्हाड़ी, डंडा न थमाकर पुस्तक पकड़ाई। लेखिका भूरी के संदर्भ में लिखती है– ''उसने समझ लिया मद को और खुद को लुटाना जरूरी है। राह पगडंडियों के, खेतों–मैदानों के, गाँवपुरा के मालिकों की भूख नहीं रहेगी तो हम भी नहीं रहेंगे। खरपतवार की तरह उखाड़कर, सुखाकर जला दिए जाएँगे। विद्या का दामन थामा है तो बेबसी और बदरंगतों से गुजरना होगा।''[4]

छुआछूत की समस्या – वर्ण व्यवस्था तथा जातिगत भेदभाव का प्रचलन वैदिक काल से हम देखते आ रहे हैं परंतु आज भी कज्जा आदिवासियों को इस समस्या का सामना करना पड़ता है। उपन्यास में दर्शाया गया है कि कच्चा जाति के बच्चे जब हैंडपंप से वे पानी पीते हैं तब मास्टर जी इसका विरोध करते हुए कहते हैं कि ''तू नल नहीं छूएगा। नल के आसपास भी देख लिया तो... याद रखना, यहाँ सिपाही आते हैं, पकड़वा दूँगा। प्यास के कारण उस बच्चे का गला चटकने को आ गया। तभी मास्टर जी ने सुझाव दिया कि, तालाब में से पीकर आ।''[5] यह सब देखकर पाँचवीं कक्षा का बच्चा राणा की सहनशक्ति जवाब दे गयी और वह कहने लगा–''पानी की स्वच्छता वाला पाठ अभी दो दिन पहले ही पढ़ाया था मास्टर जी को पता नहीं कि तालाब में कज्जा लोगों के बच्चे टट्टी–पेशाव फेंकते हैं। औरतें–आदमी शौचते हैं।''[6]

यौन शोषण से पीड़ित स्त्री – इस उपन्यास में अनेक स्थानों पर स्त्रियों का यौन शोषण होते दिखाई देता है। महिला पात्र कदमबाई का शोषण मंशाराम द्वारा किया जाता है। मंशाराम ने जब पहली बार कदमबाई को देखा था तो वह उसकी दुबली–पतली काया पर मर मिटा था वह उसे किसी भी कीमत पर पाना चाहता था। लेकिन कदमबाई का विवाह जंगलिया से हो गया था। इसलिए मंशाराम जंगलिया को चोरी के इल्जाम में पुलिस से पकड़वा देता है और खुद धोखे से कदमबाई को पाना चाहता है वही दूसरी तरफ कदमबाई की यौवन भरी मांसल देह जंगलिया का अधिक विरह न सह सकी और विरह में तड़पने लगती है। फागुनी बसंती रात में जंगलिया कदमबाई से मिलने का वादा करता है। जिस स्थान पर जंगलिया रात में कदमबाई को मिलने का वादा करता है। उस स्थान पर जंगलिया के आने से पहले मंशाराम पहुँच जाता है और धोखे से जंगलिया की हत्या करके कदमबाई की देह को हासिल कर लेता है। परंतु उस रात की घटना से कदमबाई के गर्भ में एक अंश छूट जाता है। उपयुक्त कथन के माध्यम से स्पष्ट है कि ''और उस रात ने, उस फसल ने, उस प्यार ने कदम के गर्भ में एक अंश बूँद बढ़ने के लिए छोड़ दी। बूँद की गंद हवा के साथ खेतों पर फैल गई।''[7] वहीं दूसरी ओर डाकू से समाज कल्याण मंत्री बने श्री राम शास्त्री के यहाँ अल्मा पहुँचती है तो अल्मा का वहाँ भी यौन शोषण किया जाता है। मंत्री श्री राम शास्त्री को खुश करने के लिए उसे परोसा जाता है लेकिन अल्मा इसका जब विरोध करती है तो उसे मारा–पीटा जाता है तथा उसके कपड़े फाड़कर नग्न करके खड़ा करवा दिया जाता है लेखिका ने अल्मा के शोषण को इस प्रकार व्यक्त किया है–''सूरजभान तलाशी लेने के बहाने इस देह का रोम–रोम नाप चुका था। उसके साथी परसराम ने शरीर का नग–नग टटोला था। नंगापन पहली बार लगता है, बार–बार नहीं, इस बात को हर औरत जानती है। अल्मा खड़ी की गई। खड़ी हो गई। समझ रही थी, खड़े होकर ज्यादा नंगी हो जाती है देह...। जो अंग छिपाने चाहिए, वे उघड़े पड़े हैं तो सिर झुकाकर भी क्या होगा?''[8]

पुलिस प्रशासन की अनैतिक नीतियाँ – अल्मा कबूतरी उपन्यास में अनेक स्थानों पर पुलिस की अनैतिक व्यवहार को उजागर किया गया है कि किस प्रकार पुलिस इन लोगों को परेशान करती है। उपन्यास में भूरी का पुत्र रामसिंह जब पढ़ लिखकर अध्यापक बन जाता है तो सवर्ण वर्ग के पुलिस नीति को लेकर बात करते हैं ''ये साले तो अपना रोजगार बदल रहे हैं। एक दिन ऐसा आएगा कि पुलिस महीना हफ्ता तो क्या पगार तक को तरस जाएगी। आरक्षण के जरिए बढ़े आ रहे हैं अभी तो, फिर खुद–ब–खुद जागरूक हो जाएँगे।''[9] रामसिंह के द्वारा हफ्ता न देने की मजबूरी बताने पर पुलिस वाले उसकी पत्नी को उसके सामने गंदी गालियाँ देते हैं। और दुबारा वसूली पर आ धमकने पर लेखिका लिखती है कि ''रामसिंह ने देखा पत्नी की आँखों में अंधड़ और पेट में बच्चा है। नन्ही अल्मा की फुदकती पुतलियों में डर और गले से चीख निकल पड़ी। तो अबकी बार ये लोग कमर कसकर आए हैं, क्योंकि इस खतरे से डर गए हैं कि रामसिंह कबूतरा हफ्ता महीना देने से पीछे हट रहा है। दबी–छिपी बस्तियाँ यही उदाहरण न अपना लें ? अंकुआ फूटने से पहले बीज को मसल दिया जाए, किस्सा खत्म। रामसिंह बदहवास–सा हँसा भी–आजादी सबका जन्मसिद्ध अधिकार है– हा हा हा हा! अपने लिए भी समझ बैठा था। आज जिंदगी का

डर छिपाए नहीं छिप रहा।''[10] इस हँसी के पीछे की रूदन सच्चाई यह है कि आजादी का सपना केवल देश के उच्चजाति के सभ्य नागरिको का है उस जैसे कबूतरा का नहीं।

राजनैतिक संघर्ष से ग्रस्त कबूतरा जनजाति – उपन्यास में राजनैतिक दबाव को भी दिखाया गया है इसमें श्रीराम शास्त्री के द्वारा चुनाव जीतने के लिए अल्मा का उपयोग किया जाता है। अल्मा को वोट बैंक की तरह प्रयोग करने के लिए उससे विवाह भी कर लेता है इस संदर्भ में लेखिका स्पष्ट लिखती है ''अल्मा, परामर्श में मंत्री–सी, सेवा में दासी–सी, खिलाने–पिलाने में माता–सी और सेज पर रम्भा–सी! श्रीराम शास्त्री के यहाँ का हर तौर–तरीका अल्मा के सलीके का मोहताज हो उठा।''[11] चुनाव प्रसार कार्य के दौरान श्रीराम शास्त्री जी को कोई गोली मारकर हत्या कर देता है। इन सबका सामना अल्मा बड़ी ही वीरता के साथ करती हुई दिखाई देती है। श्रीराम शास्त्री जी को मुखाग्नि देने का कार्य भी स्वयं अल्मा करती है लेखिका इस संदर्भ में लिखती है ''अल्मा ने आहिस्ता–आहिस्ता अग्निमुख उठा लिया और अनवरत गूँजती मंत्रध्वनि के बीच श्रीराम शास्त्री की 'चंदन चिता' अग्नि समर्पित कर दी।''[12] उपन्यास के अंत में अखबारों में दो खबरें चलती हैं। पहली ''विशेष खबर यह थी–प्रदेश के समाज कल्याण मंत्री श्रीराम शास्त्री का अंतिम संस्कार ओरछा के कंचना घाट पर संपन्न हुआ।''[13] तथा दूसरी खबर थी ''श्रीराम शास्त्री के निधन के कारण खाली हुई बबीना विधानसभा सीट के लिए सत्तारूढ़ पार्टी की ओर से श्रीराम शास्त्री की निकटतम सहयोगी और निष्ठावान गाइड अल्मा उम्मीदवार होंगी।''[14]

अंततः निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि मैत्रेयी पुष्पा अल्मा कबूतरी उपन्यास के माध्यम से आदिवासी जनजाति के वास्तविक जीवन को दर्शाती हैं तथा पुलिस प्रशासन की अनैतिक शोषण नीतियाँ, अत्याचार, राजनैतिक दबाव, उच्चजाति वर्ग की मानसिकता, अभावग्रस्त जीवन, आपराधिक कर्म कथा का चित्रण, नारी शोषण की विकृत परंपरा आदि का वर्णन उपन्यास में किया गया है। लेखिका जी ने कबूतरा जनजाति के जीवन की विभिन्न समस्याओं को अत्यंत सशक्त रूप से उपन्यास में दर्शाया हैं।

संदर्भः–

1. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली सं. 2016, कवर पृष्ठ से
2. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली सं. 2016, पृ.104
3. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली सं. 2016, पृ.11–12
4. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली सं. 2016, पृ.75
5. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली सं. 2016, पृ.82
6. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली सं. 2016, पृ.82
7. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली सं. 2016, पृ.22
8. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली सं. 2016, पृ.360–361
9. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली सं. 2016, पृ.105
10. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली सं. 2016, पृ.104
11. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली सं. 2016, पृ.373
12. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली सं. 2016, पृ.389
13. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली सं. 2016, पृ.390
14. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली सं. 2016, पृ.390